International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, RJIF (Impact Factor) 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 07-09

राम भक्ति साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी

हिन्दी विभाग, गोगटे-जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी, महाराष्ट्र, मुंबई विश्वविद्यालय।

प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदास भक्तीकाल की गतिशील लोकोन्मुख परंपरा के साक्षात विग्रह है। उनका नारी संबंधी दृष्टिकोण भी तत्कालीन कवियों से काफी आगे है। वे नारी को विधाता की अनुपम सृष्टि मानते है और मध्यकालीन सामंती परिवेश में उसके लोकतांत्रिक अधिकारी की वकालत करते है। वे जिस आत्मविश्वास और बौद्धिक तैयारी के साथ मध्यकाल की बहुपत्नी प्रथा जैसी बुराई का परिहार करते हैं जो अपने आप में एक अप्रतिम उदाहरण है। विभिन्न विद्वानों ने नारी समाज को कहाँ तक किस दृष्टि से देखा - परखा उनको सामने रखकर लोक स्रष्टा, युग प्रवर्तक और समाज उद्धारक पर नारी - निंदा की जो चन्द्रकालिनी देखी वह कहाँ तक सत्य है, उसको तभी उजागर किया जा सकता है जब तुलसी काव्य को सजग, सार्थक समालोचकपूर्ण रुप से अनुशीलता करें तभी वह लोक नायक के नारी विषयक तथ्य को समझ सकता है। तुलसी की नारी भावना विवाद एवं मतभेद का विषय रही है। कतिपय विद्वानों के अनुसार तुलसी ने नारी - जाति को आदर और श्रद्धा की पात्री माना है। आचार्य शुक्ल ने तुलसी के नारी - निंदा के प्रसंगों को अर्थवाद के अंतर्गत लाकर उनके ऊपर आरोपित नारी - निंदा के दोष के परिहार करने का प्रयास किया है।

नारीपात्र

रामचरितमानस के नारी पात्रों के दो वर्ग हैं सत्पात्र और असत्पात्र। तुलसी के पास सत्पात्रता का एक ही मानदंड है - रामभक्ति। जिनके मन में राम के प्रति सद्भाव भक्तिभाव है वे सत्पात्र या सुनारियाँ हैं। जो राम के प्रति दुर्भाव रखती हैं वे असत्पात्र या कु-नारियाँ है। तुलसी सहित्य में सच्चरित्र नारी-पात्रों की संख्या बहुत बड़ी है। निंदनीय कही जानेवाली नारियाँ गिनी-चुनी है; निंदनीय पुरुषों की संख्या कहीं अधिक है। तुलसी के नारी पात्र परंपरागत हैं। निंदित नारीपात्रों में ताड़का, कैकयी, मंथरा और सूर्पणखा का नाम पहले लीजिए। ताड़का चित्रण केवल दो पंक्तियों में किया गया है -

> ''चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई।।
> एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।''

जहाँतक तुलसी-कृत चरित्रांकन का प्रश्न हैं, ताड़का बहुत बुरी नहीं है। पहल उसकी ओर से नहीं हुई, उसे विश्वामित्र ने छेड़ा है। किसी स्त्री की ओर इशारा करना अशिष्टता है। ऐसी स्थिति में ताड़का का क्रुद्ध होना स्वाभाविक है। दीन कहकर तुलसी ने उसके प्रति थोड़ी सहानुभूति भी व्यक्त कर दी है।

कैकेयी का चरित्र उदात्त है। उसमें ओछापन नहीं हैं, रानी की गरिमा है। सौतेले बेटों के प्रति भी उसके मन में स्नेह है। मंथरा से राम के अभिषेक का समाचार मिलने पर उसेके विशाल हृदय कि उद्गार देखिए -

> ''सुदिन सुमंगलदायकु सोई। तोर कहा फुर जेहि दिन होई।।
> जेठ स्वामि सेवक लघुभाई। यह दिनकर कुल रीति सुहाई।।''

मंथरा ने बड़े मनोवैज्ञानिक और तर्क संगत ढंग से उसे समझाया। उसके पुत्र की अनुपस्थिति में एक पाख तक राम के तिलक की तैयारी होती रही और उसे सूचना तक नहीं दी गई। यह बात ही ऐसी है जो बुरी लगे। सौत का शासन सभी नारियों को खेलता है। कैकेयी उसकी कल्पना करके सिहर उठती है। उसका तेज जागृत हुआ, मातृस्नेह उमड़ा। उसने अपने इकलौते पुत्र के लिए राज्य माँगा, उसकी सुरक्षा के लिए राम को वनवास। उसे क्या पता था कि दशरथ सचमुच प्राण त्याग देंगे और जिस भरत के लिए उसने सब कुछ किया है वे ही उसका तिरस्कार करेंगे। उसने गलत मार्ग अपनाया, लेकिन कुशलता और दृढ़ता से उसका निर्वाह किया। प्रिय सखियों और विप्रबधुओं ने बहुतेरा समझाया, फिरभी वह टस से मस नहीं हुई।

कैकेयी का आचरण चिंत्य है। वैधव्य एक हिन्दू नारी के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। परंतु विडंबना यह है कि कैकेयी उसे मामूली क्षति समझ रही है। भरत ने अप्रत्याशित रुप से उसकी भर्त्सना की। सब अपनी भूल का अनुभव हुआ। वह मौन हो गई और अंत तक उसने मुँह नहीं खोला। यह अभक्त की निंदा है। नारी की बात संयोगवश आयी है। केवर राम-चप-गमन के प्रसंग को छोड़कर कैकेयी का शेष चरित्र उत्कृष्ट है। वहाँ पर भी परिस्थितियों ने उसे विविश कर दिया है। तुलसी की कट्टर रामभक्ति के कारण उसे अपशब्द सुनने पड़े हैं।

मंथरा बेचारी बिल्कुल निर्दोष है। उसकी मति को देवी सरस्वती ने फेर दिया था।

> ''अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरी।''

सुर्पणखा का चित्रांकन कुत्सित रुप में हुआ है। आरंभ ही निन्दात्मक है।

> ''सुर्पनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी।।
> पंचवटी सो गई एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा।।''

उसका यह आचरण नारी पीड़ा का परिचायक है, किन्तु सामाजिक मर्यादा और नारी धर्म के विरुद्ध होने के कारण - तुलसी की दृष्टि में अक्षम्य है, इसलिए पहले तो उसका खूब तमाशा बनाया गया और फिर राम के इशारे पर लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिए।

तुलसी की दृष्टि स्पष्ट है - यदि नारी भी सीता-राम के विरोध में आ पड़े तो उसे दंड़ित होना चाहिए। ताड़का जान से मारी गई, सूर्पणखां के नाक-कान काटे गए, मंथरा प्रतियायी गई और कैकेयी को कठोरतम दंड मिला-उसका इकलौता औरस पुत्र जीवन भर उसकी अवमानना करता रहा।

उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि इन निकृष्ट समझी जानेवाली नारियों का चित्र पुरुष-पात्रों की तुलना में अधिक बुरा नहीं है। दूसरी ओर, सात्विकशील नारियों के चरित्रांकन में तुलसी ने अत्यंत उदार दृष्टि से काम लिया है। कौशल्या का चरित्र परम उदान्त है। उनके द्वारा पिता की अपेक्षा माता को महत्तर स्थान दिलाया गया है, पति भक्ति की प्रतिष्ठा की गई है और सौत के प्रति भी सद्भावना का आदर्श प्रस्तुत किया गया है -

> ''जौं केवल पितु आयेसु तात। तौं जनि जाहु जानि बड़ि माता।।
> जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ काननु सत अवध समाना।।
> जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदय होई संदेहू।।''

सुर्पणखा का अंग-भंग करनेवाले लक्ष्मण ने तारा का उचित सम्मान किया। राक्षसी मंदोदरी का स्थान और भी उच्चतर है। रावण को दार्शनिक उपदेश देने के लिए राम के विराट रुप का निरुपण करने के लिए यह नारी ही उपयुक्त समझी गई। अनुसूया ने श्रद्धालु सीता को नारी-धर्म का उपदेश दिया है। राम ने शुद्र शबरी पर विशेष कृपा की है। त्रिजटा को सीता ने मातु का पद दिया है। गीतावली, रामचरितमानस और कवितावली के अयोध्याकांड में ग्राम वधुओं का चित्रांकन उनके प्रति तुलसी की अतिशय सद्भावना का प्रमाण है। तुलसी ने सीता तथा पार्वती के अतिरिक्त कौशल्य, सुमित्रा आदि नारियों की भी सादर वंदना की है। उनके काव्य में निबद्ध नामक पक्ष के हीं नहीं, प्रतिनायक पक्ष के भी अधिकांश नारी-पात्र समाज के श्लाह्य आदर्श है।

नारी धर्म

तुलसी ने सनातन परंपरा के अनुसार पति-सेवा को ही नारी का एकमात्र धर्म बतलाया है।

''एक धर्म एक व्रत नेमा। काय बचन मनप्रति पद प्रेमा।।
सहज अपावनि नारि पति सेवक सुज्ञ गति लहइ।।''

पतिव्रता धर्म नारी जीवन का साध्य है। पति-वंचना नारी का घोरतम पाप है। सभी प्रकार से हीनपति का भी अपमान करनेवाली नारी नरककामिनी होती है। तुलसी ने नारी के धर्माधर्म और पुरुष-परतंत्रता का जो चित्रण किया है वह आज के समतावादी सुधारवादी आलोचक को खल जाता है। उन्होंने अब से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व जो लिखा था वह उस युग की परिस्थिति के प्रतिकूल नहीं था। तुलसी ने पुरुष के विषय में भी एक पत्नीव्रता की धर्मसंहिता प्रस्तुत की है। उने मर्यादा पुरुषोत्तम राम इसके महान आदर्श हैं। परनारी विषयक प्रवृत्ति की भी उन्होंने निंदा की हैं -

''लोभी लंपट लोलुप चारा। जे ताकहिं पर धनु पर दारा।।
पावौं मैं तिन्ह कै गति धोरा। जौं जननी एहु सम्मत मोरा।।''

इसमें संदेह नहीं कि तुलसी ने पुरुष की सच्चरित्रता की अपेक्षा नारी की सच्चरित्रता पर अधिक बल दिया हैं। इसके दो कारण हैं, तब भी थे और अब भी है। एक यह कि पुरुष का चरित्रदोष उतना संक्रामक नहीं है, जितना नारी का। दूसरा यह कि जिस गलती के कारण पुरुष का कुछ नहीं बिगड़ता उसी के कारण नारी पर कलंक का अमिट टोका लगा दिया जाता है। बिना अपराध के ही -अग्नि-परीक्षा के बाद भी, सीता को राम के हाथों निर्वासित होना पड़ता था।

नारी निंदा

तुलसी ने अनेक स्थलोंपर नारी - निंदा-परक वचन कहे या कहलाए हैं। जहाँ कवि की दृष्टि से, काव्यधर्म के आग्रहवश, निंदा की गई हैं वहाँ नारी की स्वभावगत विशेषता का उल्लेख किया गया है अथवा नारी को सामान्य भोग्य वस्तु मानकर उसकी तुच्छता प्रदर्शित की गई है। जहाँ मोक्षधर्म की दृष्टि से नारी का कुत्सित चित्रांकन हुआ हैं वहाँ नारी को काम का आलंबन मानकर वैराग्योद्बोधनके लिए उसका दोष-दर्शन किया गया है। नारी की निंदा करनेवाले व्यक्ति स्वयं तुलसीदार उनके आराध्य राम, संतभक्त, असज्जन पात्र और नारियाँ भी है। अपने को जड़ समझने वाला अनुत्तम समुद्र कहता है -

''ढोल गवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।''

अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अन्य दृष्टांतों के साथ नारी का भी अप्रस्तुत-विधान किया गया है। तुलसी के पूर्व ओर उनके युग में भी नारी को कठोर शासन में रखना आवश्यक समझा जाता था। अधिकारी शब्द में ध्वनित होता है कि ताड़ना नियम नहीं है, आवश्यकता पड़ने पर ताड़ना की जानी चाहिए। इसी के साथ रावण की उक्तियाँ भी विचारणीय है -

''नारी सुआउ सत्य कबि कहहीं। अवगुण आठ सदा उद रहहीं।।
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक असौच अदाया।।''

यह सिद्धांत वाक्य नहीं है, स्वभाव-कथन है। जिस प्रसंग में और जिस ढंग से यह बात कही गई है उससे हास्य की अनुभूति होती है, किसी गंभीर विचार की नहीं।

तुलसी ने नारी को माया कहा। तुलसी के सिद्धांतानुसार राम और काकभुशुंडि ने नारी को माया कहा है-

''तिन्ह महँ अति दारुन दुखद माया रुपी नारी।''

माया को विद्या और अविद्या के रुप में स्पष्ट कर अविद्या भी स्पष्ट कर दी। पुरुष को कामविकल कर देनेवाली युवती अविद्यारुप है। वही निंदनीय या जुगुफूनीय है। तुलसी के नारी-पात्रों में कैकेयी और सूर्पणखा इसी प्रकार की नारियाँ हैं। तुलसी ने लोकरीति में पड़कर संभवत: स्वयं भी उसके इस रुप काँ कर अनुभव किया था। अनुसूया, कौसल्या आदि विद्यारुपा नारियाँ हैं, अत: आदरणीय है। सीता संपूर्ण माया हैं। वे विद्यारुपा भी हैं और अविद्यारुपा भी। रावण आदि अभिमानियों के लिए वे अविद्यारुप हैं। इस अविद्यामाया से अलग रहकर रावण सुखी था, इसके संबंध से ही उसका सत्यानाश हुआ। हनुमान तुलसी आदि के लिए सीता विद्यामाया हैं उनके लिए पुरुषाकार रुपा हैं। इसी प्रकार लोक जीवन में एक ही नारी किसी पुरुष के लिए मोह एवं कष्ट का कारण हो सकती है, और किसी अन्य के लिए आनंद तथा कल्याण का।

चुंकि समाज सुधारक थे तुलसीदास, समाज व्यवस्था की दृष्टि से युगधर्म प्रतिपादन भी उनका लक्ष्य था, उन्हें अपने महाकाव्य में अवेक्षित और अनुभूत जीवन के वैविध्यपूर्ण चित्र अंकित किये थे। उनका साहित्य कवित्व और भक्तिदर्शन तक ही सीमित नहीं रहा, उसमें नीति और लोकधर्म का भी विशद निरुपण हुआ। अपने अध्ययन सत्संग और संस्कारों के अनुसार उन्होंने परंपरावादी दृष्टिकोण अपनाया। उपक्रम में नारी-निंदा भी आ गई। इस माध्यम से कविने पुरुष जाति के स्वभाव का भी उद्घाटन कर दिया है।

तुलसी काव्य में बहुपत्नी वाद का विरोध भी स्पष्ट दिखाई पड़ाता है, उसके पीछे भी समकालीन समाज की दृष्टि उनके सामने इसका विरोध करने को बाध्य किया। कारण कुछ ऐसे राजशाही दरबार लगते थे जहाँ स्त्रियों के बाजार लगते थे। कई ऐसे मुसलमान बादशाह थे जिनके पास कई रानियाँ थी, उसका जिक्र राम-काव्य में दिखलाई पड़ता है, जिसकी बड़ी कड़ाई से विरोध किया गया है और पति-पत्नी के आदर्शों को मानस में शिव-पार्वती प्रसंग में बड़ी गरिमा के साथ चित्रित किया गया है। श्री नारायण सिंह ने क्रांतिकारी तुलसी' में स्त्री सम्मान व दाम्पत्य की चर्चा करते हुए लिखा हैं, सामाजिक क्षेत्र में, विशेषकर राजाओं के जीवन में, तहलका मचा देनेवाली यदि कोई सबसे अधिक महत्वशालिनी क्रांति थी, तो वह हमारी समझ में थी-बहु-विवाह अथवा बहु-पत्नियों की प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाना। राम एक अत्यंत बलशाली राजा होते हुए भी इस पुरानी प्रथा को जिसके शिकार स्वयं उनके पिताजी थे, ठुकराकर जन्म पर्यन्त ए पत्नी ब्रत को इस तरह निंबाह्य कि स्वप्न में भी कभी पर-स्त्री को कुदृष्टि से नहीं देखा। यह महाक्रांति का स्वरुप नहीं तो और क्या है? स्त्रियों के प्रति इससे अधिक उच्च क्रांतिकारी भावना और क्या हो सकती है कि राम के छोटे सौतेले भाई लक्ष्मण अपनी भाभी के मार्ग में उछरे हुए पद-चिन्हों तक को इतना पूज्य मानते थे कि कहीं भूल से चलते समय उनके पद-तल उन पर पड़ जाएँ।''

गोस्वामीजीने सचमुच मे उस समय के समाज का जो रंग मंच देखा उससे जरुर उनका दिल पसीजा होगा। वे बहु-पत्नीत्व के उस पाशविक विषाक्त वातावरण को श्री रामचंद्रजी के माध्यम से समाज में एक नया मोड़ देने का संकल्प लिए

होंगे और उसका प्रभाव समाज में अवश्य दिखाई पड़ा जो सचमुच तुलसी की एक बहुत बड़ी क्रांति ही कही जा सकती है।

समाज में नारी की उच्छृंखलता, आदर्शविहिना देखकर मर्यादा वादी पुरुष कवि के हृदय में नारी के प्रति क्षोभ आ जाना स्वाभाविक ही है। युग एवं राष्ट्र की निर्माण कत्री में जिस उदात्त आदर्श की भावना उन्हे अभिलाषित थी, उसके अभाव में उनके शब्द में नारी के प्रति कटुता और हीनता की भावना आ गयी है। इससे यह अनुमान लगाना कि गोस्वामी तुलसीदास ने नारी का केवल कृष्ण रुप ही देखा, उसके सत् रुप की ओर ध्यान न दिया, समुचित नहीं है। नारी के सती रुप, पति प्रेमरता, पतिव्रता के पावन स्वरुप, उसके दृढ़ नियम के प्रति उनके मन में मोह रहा होगा, तभी वे शम्भु-धनुष की अटलता की तुलना सती के निर्विकार चित्त से करते है -

''....डिगै न संभु सरासन कैसे। कामी बचन सती मन जैसे।''

तुलसी के काव्य में नारी की सामाजिक स्थिति और धार्मिक अधिकारों पर सम्यक प्रकाश पड़ता है। तुलसीदास ने धर्म से बहिष्कृत नारी को भी भक्ति की अधिकारी माना है तथा भक्ति साधन द्वारा उसके मोक्ष-साधन के अधिकार को मान्यता दी है

''राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति की अधिकारी।।''

समापन

गोस्वामी तुलसीदास को हिन्दी का पहला नारी अधिकारवादी बतलाते हुए डॉ.करुणाशंकर उपाध्याय ने लिखा है, तुलसी मध्यकाल की जिस दूसरी सामाजिक बुराई का परिहार करते हैं वह है बहुपत्नी प्रथा। इतिहास साक्षी है कि अकबर एवं जहाँगीर जैसे बादशाहों के हरम में भी आठ सौ से एक हजार के मध्य बेगमें थी। जिन्हें पति का सुख शायद ही कभी मिला हो। इस भयावर सामाजिक बुराई और नारी के प्रति असमान व्यवहार को लक्षित करके ही वे कहीं न कहीं यह संकेतिक करते हैं कि दशरथ जैसे प्रतापी सम्राट की दुर्दशा के लिए बहुपत्नी प्रथा ही जिम्मेदार हैं और दुनिया का सबसे शक्तिशाली एवं समृद्ध साम्राज्य इसलिए ध्वस्त हो जाता है कि उसका स्वामी अर्थात् लंकेश्वर रावण अनेक सुंदर पत्नियों के होते हुए भी दुसरे (राम) की पत्नी के प्रति आसक्त है। यह मूल्य क्षय ही सर्वनाश का कारण है। रामराज्य तभी आ सकता जब लोग राम की तरह एक पत्नीव्रत का पालन करें। नारी को उसका स्वाभाविक अधिकार एवं मान-सम्मान दिलाने के कारण तुलसी नारी अधिकारवादी साहित्यिक हैं। आज के स्त्री विमर्श की रचनात्मकता के आयोजकों - संयोजकों को इस दिशा में सोचना चाहिए। जबकि उन्हें अज्ञान के कारण नारी निंदक की संज्ञा से अभिहित कर दिया जाता हैं। लेकिन वास्तविकता यह हैं कि तुलसी के जितने भी आदर्श और सम्मान पात्र हैं वे नारी के प्रति अत्यंत पूज्य एवं स्नेहिल भाव का ही प्रदर्शन करते हैं। केवल समुद्र तथा रावण जैसे पात्रों के मुख से ही नारी निंदा हुई है जो स्वयं तुलसी के ही अनादर्श और प्रतिनायक है। इस संदर्भ में तुलसी प्रकारांतर से इन बुरे पात्रों के व्यक्तित्व की कमजोरियों एवं दुर्भावनाओं को उभारने के लिए ही नारी के प्रति उनके अशोभनीय रवैये को उद् घाटित करते हैं। जिससे पाठक के मन में इन पात्रों के प्रति, वितृष्णा पैदा हो। यह तुलसीदास की अपनी कहन शैली हैं जिसे कम से कम बुद्धिजीवियों द्वारा सही संदर्भ में देखने की अपेक्षा हैं।